



सी एस आई आर समाचार

प्रगति, विश्वास और आशा

वर्ष 28 अंक 12 दिसम्बर 2011

इस अंक में

186

सीएसआईआर-एनबीआरआई में
टच एंड स्मैल गार्डन स्थापित.....



188

निरुद्धेय हीरक जयंती समारोह तथा
सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह.....



190

सीबीआरआई, रुड़की में 69वाँ
सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह.....



191

एनबीआरआई, लखनऊ में सीएसआईआर
स्थापना दिवस समारोह का आयोजन.....



194

सीएसआईओ में सीएसआईआर
स्थापना दिवस



195

एनबीआरआई में बोन्साई,
साइकेड एवं पामहाउस



सीएसआईआर-एनबीआरआई में टच एंड स्मैल गार्डन स्थापित

डॉ. कमला कुलश्रेष्ठ

पर्यावरण शिक्षा, वनस्पति उद्यान राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

किसी उद्यान का नाम लेते ही रंग बिरंगे फूलों की करीने से लगी हुई क्यारियां विविध आकार की खूबसूरत पत्तियों की सज्जा तथा उसमें चहुं ओर फैली सुगंध का अहसास हमारे मन-मस्तिष्क में स्वतः ही आ जाता है। ऐसे पौधे हमारे हृदय को सुकून सा देते हैं और शरीर की समस्त थकान व व्याधियां थोड़े समय के लिए मानो दूर हो जाती हैं। परन्तु हमारे ही कुछ भाई बान्धव दुर्भाग्यवश, जो दृष्टिहीन होते हैं, इस प्रकार के सुखद अहसास से वंचित रह जाते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में दृष्टिहीन व्यक्तियों के लिये उद्यान बनाया है। इस उद्यान में भ्रमण करके दृष्टिहीन व्यक्ति प्रकृति की इस अनुपम सौगात का आनंद उठा सकते हैं। यहां लगे ब्रेल लिपि में वर्णित पौधों की प्रजातियों उनके कुल, उपयोग तथा औषधीय गुण आदि जानकर उनके पर्यावरण के विषय में उपजे कई प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।

सिर्फ दृष्टिहीन ही नहीं अपितु विकलांग व्यक्ति भी अपनी व्हील चेयर पर इस उद्यान

के रास्तों पर चलकर पेड़ पौधों के पास तक पहुंच सकते हैं। तथा हिन्दी व अंग्रेजी में लिखी हुई उपयोगी नाम पट्टियों से उनके विषय में ज्ञान अर्जित कर सकते हैं। इस उद्यान में **आर्टीमिसिया, ब्रनफेल्लिसिया, वुड्लेजा बरसेरा, सेस्ट्रम, सिम्बोपोगॉन, गारडिनिया, इक्जोरा, तुलसी, मालती** तथा कामिनी जैसे सुगन्धित फूलों, पत्तियों या रंजिन वाले पौधे लगे हैं। यह उद्यान पौधों को छूकर, उनकी सुगंध से तथा उन्हें महसूस करने के सिद्धान्त पर आधारित है, जिसे टच, फील एंड स्मैल का सिद्धान्त कहा जाता है। यह भारत में बना इस प्रकार का पहला अनूठा उद्यान है।

सीएसआईआर-एनबीआरआई के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल के अनुसार अधिक से अधिक दृष्टिहीन व्यक्तियों का इस उद्यान से लाभान्वित होना ही इस उद्यान का उद्देश्य एवं सफलता है। कोई भी उद्यान जिसमें, कतार में तरतीब से लगे खूबसूरत पौधे हों, रंग बिरंगे चमकीले फूल जिनसे फैलती भीनी भीनी खुशबू हो, मन को सम्मोहित करने के लिए पर्याप्त है।

प्रकृति में ईश्वर ने इतनी विविधता भरी है कि हर फूल दूसरे से अलग, हर पत्ती अलग प्रकार की और महक और खुशबू की भिन्नता तो प्रायः बताई नहीं जा सकती। ऐसा प्रतीत होता है कि सोच तो बहुत दूर तक जाएगी और शब्द हमेशा ही कम पड़ेगें। अत्यंत भाग्यवान हैं वे लोग जो इन दृश्यों को देख सकते हैं, खुशी को महसूस कर सकते हैं और भावनाओं को आत्मसात कर सकते हैं। दृष्टिहीन लोगों को सहानुभूति नहीं ज्ञान की आवश्यकता होती है क्योंकि इनकी महसूस करने की इन्द्रियां उन व्यक्तियों की इन्द्रियों से कहीं ज्यादा विकसित होती हैं जो प्रकृति की खूबसूरती को बखूबी देख सकते हैं।

इन्हीं भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में एक ऐसा उद्यान विकसित किया गया है जो दृष्टिहीनों को समर्पित है। यह सत्य है कि जो लोग देख नहीं सकते, प्रकृति, पेड़ पौधे व पर्यावरण पर उनका हक उतना ही होता है जितना एक दृष्टि सुलभ व्यक्ति का। उद्यान के रास्ते टेराकोटा निर्मित चौकोर



टाइलों के बने हैं जिससे दृष्टिहीन व्यक्ति पानी या फिसलन की अवस्था में गिर कर चोटिल न हो जाए। रास्तों को समतल बनाए रखने के साथ इन बातों का भी ध्यान रखा गया है कि किसी प्रकार की ठोकर आदि दृष्टिहीन व्यक्ति को न लगे। रास्तों का अनुमान बड़े गोल पत्थरों द्वारा लगाया जा सकता है जिनमें मोड़ इंगित है। छोटे पत्थरों की उपस्थिति ब्रेल लिपि में लिखी सूचनाओं के स्थानों को दर्शाती है।

उद्यान में लगभग 36 पौधों का समावेश है जिनके सुगन्धित होने की महत्ता बहुत अधिक है। इन पौधों के बारे में ब्रेल लिपि में पढ़ कर तथा सुगंध द्वारा महसूस करके पहचाना जा सकता है। दृष्टिहीन व्यक्ति स्पर्श से यह भी जान सकता है कि पौधा घास, शाकीय व वृक्ष में से किस कोटि का है। पत्तियां चिकनी, रोएंदा, गुदेदार हैं या कठोर हैं। उदाहरण के तौर पर जहां सुदर्शन की पत्तियां लम्बी और मोटी हैं। गुलशाम की पत्तियां खुरदरी हैं।

यूफॉर्बिया और **सारकोस्टीमा** में तो मानो पत्तियां ही नहीं है। आगन्तुक मधुमालती, बेला, चमेली, दोलनचम्पा तथा रजनीगंधा आदि को उनकी खुशबुओं से भी पौधों को पहचान सकते हैं। **मेलाल्यूका** व **बरसेरा** का तो पूरा पौधा ही खुशबू से भरा होता है। इन

सब पौधों की वजह से वातावरण में एक सुगंध जैसे बस सी गई है।

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि पौधों को इस प्रकार पहचानने में उनमें पायी जाने वाली सुगंध की महत्वपूर्ण भूमिका है और इसे पहचानने की शक्ति दृष्टिहीनों में अधिक होती है। इसी धारणा से फलित या अन्य पौधे जो इस उद्यान में लगाए गए हैं वे तुलसी, कामिनी, जैस्मिन, लेमनघास, पुदीना, दिन का राजा, रात की रानी आदि के हैं। जहरीले, नुकीले, धारदार किनारी वाले या कांटों वाले पौधों को इस उद्यान में नहीं लगाया गया है ताकि दृष्टिहीन व्यक्तियों को किसी प्रकार हानि न पहुंचे।

उद्यान के प्रवेश द्वार पर उल्टे यू के आकार में मधुमालती की बेल है जिसके सफेद व गुलाबी फूल अपनी सुगंध छटा स्वतः ही बिखरते रहते हैं। तीन तरफ के बाड़ों के रूप में कामिनी लगाई गयी है। यह दृष्टिहानों को इंगित करती है कि यह सुगंध जैसे उद्यान के बाहरी दीवारों से आ रही है। दृष्टिहीन सिर्फ छूकर या सुगंध से ही पौधों को नहीं पहचान सकते, बल्कि उनके विषय में ब्रेल लिपि में लिखी जानकारी से पौधों का अध्ययन भी कर सकते हैं। पौधों का स्थानीय नाम, वानस्पतिक नाम, व्यावसायिक महत्व तथा औषधीय गुण

आदि के विषय में स्वतः ही पढ़ा जा सकता है। यह लिखावट ब्रेल लिपि के साथ-साथ हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में भी है।

अनपढ़ और निरक्षर दृष्टिहीनों के लिए ऑडियो ब्रेल सिस्टम लगाया गया है। ऑडियो ब्रेल सिस्टम इस उद्यान को सबसे महत्वपूर्ण बनाता है जिसमें ब्रेल लिपि में सूचनाएं अंकित हैं तथा उद्यान के विषय में तथा आस-पास के पौधों के विषय में जानकारी को टेप करके भी लगाया गया है। एक बटन जो सिस्टम के मध्य में लगा है उसे दबाकर यह जानकारी हासिल की जा सकती है।

यह भारत का पहला अनूठा उद्यान है जो दृष्टिहीन व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है जिसमें दृष्टिहीन व्यक्ति अपनी छड़ी की सहायता से उद्यान में घूम सकता है और पौधों के महत्व को समझ व आत्मसात कर सकता है। उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। इस उद्यान का स्थान विश्व में छठा है तथा ऐसे अन्य उद्यान जर्मनी, जापान, अमेरिका, चीन तथा पोलैंड में भी हैं। यह ज्ञान मिश्रित मनोरंजन का अनुपम साधन है जो समाज के उस वर्ग की सहायता करता है जिस पर अन्य लोगों ने शायद अधिक ध्यान नहीं दिया।





निस्केयर हीरक जयंती समारोह तथा सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

निस्केयर में दिनांक 30.9.2011 को हीरक जयंती समारोह तथा सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर, डॉ. गंगन प्रताप, निदेशक, निस्केयर, श्रीमती दीक्षा बिष्ट, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष, स्थापना दिवस समारोह समिति, निस्केयर तथा श्री अशोक के चावला, वैज्ञानिक जी, अध्यक्ष, हीरक जयंती समारोह समिति के साथ द्वीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ किया।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए डॉ. गंगन प्रताप ने कहा कि इस अद्वितीय अवसर पर हम सीएसआईआर स्थापना दिवस मनाने के साथ-साथ दो संस्थानों की हीरक जयंती भी मना रहे हैं। पीआईडी की स्थापना वर्ष 1951 में हुई तथा इन्सडॉक इसके एक वर्ष बाद, वर्ष 1952 में स्थापित हुआ। साठ साल, एक लम्बी यात्रा है परंतु इस अवसर को यह प्रतिबिंबित करने के लिए चुनें कि क्या कार्य पूर्ण हो पाया है तथा क्या रह गया है। हमारे देश के संस्थान जो समस्याएं झेल रहे हैं उनमें से एक है कि हम भौतिक विकास के बिना समय की वृद्धि को इंगित करते हैं।

डॉ. प्रताप ने आगे कहा कि 60 वर्ष का अनुभव तथा एक वर्ष के अनुभव को 60 बार दोहराने में बहुत अन्तर है। हमारे देश में हमारे जैसे संस्थानों का 60 वर्ष की आयु में पहुंचना काफी महत्व की बात है - एक ऐसी आयु जिसमें आप

एक हीरे में परिवर्तित हो जाते हैं तथा हीरक जयंती मनाते हैं। निस्केयर भी एक हीरे में परिवर्तित हो जाएगा तथा आने वाले समय में चमकेगा, उन्होंने गर्व से कहा।

श्री अशोक के चावला ने निस्केयर की हीरक जयंती के महत्व पर परिचयात्मक टिप्पणी देते हुए निस्केयर तथा इन्सडॉक के विभिन्न उत्पाद तथा सेवाओं का एक परिदृश्य प्रस्तुत किया जो न केवल वैज्ञानिक समुदाय के लिए हैं बल्कि विद्यार्थियों, कॉरपोरेट, नीति निर्माता तथा जन सामान्य सभी के लिए है। निस्केयर तीन अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा विभिन्न व्याख्यानों तथा अन्य विशेष कार्यक्रमों के आयोजन कर हीरक जयंती मनाएगा, डॉ. चावला ने सूचित किया।

प्रो. ब्रह्मचारी ने निस्केयर के हीरक जयंती वर्ष का शुभारम्भ करते हुए टिप्पणी की कि इस समारोह का आयोजन वर्ष के शुभ समय में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इन्सडॉक तथा पीआईडी दोनों का भूतकाल समृद्ध है तथा हमें निस्केयर का हिस्सा होने पर गर्व होना चाहिए। उन्होंने कहा कि साइंस रिपोर्टर निस्केयर का एक उपहार है। उसी प्रकार, वैलथ ऑफ इंडिया निस्केयर का एक उत्पाद है तथा हम सभी इस प्रलेखन के विषय में जानते हैं। टीकेडीएल भी निस्केयर की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है तथा आज इसकी वैश्विक पहुंच है तथा हम सभी को इस पर गर्व है। वर्तमान निस्केयर इन्सडॉक तथा पीआईडी की नींव पर निर्मित हुआ है। हम सभी इस संगठन

की उस कीर्ति का आनन्द उठा रहे हैं जिसे इसने पिछले साठ वर्षों में प्राप्त किया है तथा राष्ट्र को ऐसे विलक्षण उपहार दिये है जिन पर हमें गर्व है प्रो. ब्रह्मचारी ने कहा।

प्रो. ब्रह्मचारी ने सलाह दी कि निस्केयर के सभी सदस्यों को इस वचनबद्धता पर निश्चय करना होगा कि सीएसआईआर को निस्केयर की उपलब्धियों पर गर्व है तथा यह विश्वास है कि यह वर्ष निस्केयर का महान हीरक जयंती वर्ष होगा। प्रो. ब्रह्मचारी ने डॉ. गंगन प्रताप की उनकी आश्चर्यजनक नेतृत्व गुणों तथा सम्पूर्ण सामाजिकता की प्रवृत्ति होने पर भी उनकी विद्वतापूर्ण उत्कृष्टता तथा अन्यन्त सादे व्यक्तित्व के लिए प्रशंसा की। आगे टिप्पणी करते हुए प्रो. ब्रह्मचारी ने कहा कि हीरा तभी उपयोगी होता है जब उसका प्रयोग कांच को काट कर मशीनी उपकरण बनाने के लिए होता है अन्यथा यह मात्र एक आभूषण है। डॉ. गंगन प्रताप आभूषण ही बने रहेंगे यदि उनके अपरिमित मात्रा में निहित विद्वतापूर्ण कौशल का प्रयोग नहीं किया जाता।

प्रो. ब्रह्मचारी ने आगे कहा कि निस्केयर को भारत का प्रसिद्ध 'मल्टीमीडिया साइंस कम्यूनिकेशन सेंटर बनाने के लिए हमें इस दिशा में बहुत अधिक प्रयास करने होंगे। हम पहले ही सीएसआईआर की अकादमी की स्थापना कर चुके हैं।' आप जीवन की ओर सकारात्मकता से देखना आरम्भ कर देते हैं तथा मुझे खुशी है कि यह



निस्केयर हीरक जयंती समारोह तथा सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

सकारात्मकता प्रवाहित हो रही है। 12वीं पंचवर्षीय योजना के आकार तथा पैमाने को कार्यान्वित करने के लिए हमें बहुत से कार्यों को बंद करना होगा तथा बहुत से ध्यान भंग करने वाले तुच्छ मुद्दों में लिप्त होने से बचना होगा। प्रो. ब्रह्मचारी ने कहा विज्ञान संचार विशेषज्ञ की भारी मात्रा में कमी है और यही कारण है कि साइंस कम्यूनिकेशन पीजी डिप्लोमा तथा सामग्री विकास के लिए मल्टीमीडिया स्टूडियो हमारी एक महत्वपूर्ण गतिविधि बन गये हैं। क्या निस्केयर विज्ञान संचार प्रबंधन के लिए एक हल बन सकता है? इसे करने के लिए निस्केयर के पास एक बड़ा अवसर है, प्रो. ब्रह्मचारी ने

टिप्पणी की। उन्होंने अपनी वार्ता का अन्त विवेकानन्द को उद्धृत करते हुए किया - खड़े हो जाइए, दबंग बनिए, सशक्त बनिए, सारा उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लीजिए तथा यह जानिए कि अपने भाग्य के निर्माता आप स्वयं हैं। अतः आश्वस्त हो जाइए कि सीएसआईआर आपके लिए बहुत मायने रखता है। राष्ट्र भी आपके लिए बहुत मायने रखता है तथा मैं यह देखता हूँ कि निस्केयर सीएसआईआर के लिए बहुत मायने रखता है, प्रो. ब्रह्मचारी ने बहुत उत्साह से कहा। समारोह का समापन श्रीमती दीक्षा बिष्ट के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ जिसमें उन्होंने मुख्य अतिथि तथा समारोह

में उपस्थित सभी लोगों का हार्दिक धन्यवाद दिया। इसके पश्चात् निस्केयर के कार्मिकों द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरम्भ हुआ। समारोह में 25 वर्ष की सेवा पूर्ण करने वाले कार्मिकों तथा गत वर्ष सेवानिवृत्त हुए कार्मिकों को प्रमाण पत्र तथा स्मृति चिह्न प्रदान किये गये। निस्केयर की हीरक जयंती तथा सीएसआईआर स्थापना दिवस के ऐतिहासिक अवसर को मनाने के लिए आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागी तथा विजेता निस्केयर कार्मिकों के बच्चों को भी पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र दिये गये।

सीबीआरआई, रुड़की में 69वाँ सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह

सीएसआईआर-केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान (सीबीआरआई), रुड़की ने 26 सितंबर, 2011 को सीएसआईआर का 69वाँ स्थापना दिवस बड़े उत्साह और धूमधाम से मनाया। समारोह में प्रो. दुर्गा सिंह चौहान, कुलपति, उत्तराखंड तकनीकी विश्वविद्यालय, देहरादून मुख्य अतिथि थे तथा प्रो. एस. के. भट्टाचार्य, निदेशक, सीएसआईआर-सीबीआरआई ने समारोह की अध्यक्षता की।

मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर विज्ञान तथा इंजीनियरी के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न प्रयोगशालाओं और विशेष रूप से सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में सीएसआईआर-सीबीआरआई, रुड़की का, दुर्गम क्षेत्रों तथा पहाड़ी क्षेत्रों, समुद्र तटों, घटिया तथा निम्न मृदा क्षेत्रों इत्यादि में रहने वाले लोगों की बहुत सी आवास समस्याओं के समाधान में दिए गए योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने जोर देकर आगे कहा कि आवास एक जटिल विषय है जिसमें विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विभिन्न विशेषज्ञ क्षेत्र सम्मिलित हैं एवं एक मजबूत सहयोग की अपेक्षा है तथा देहरादून तकनीकी विश्वविद्यालय तथा सीएसआईआर-सीबीआरआई के बीच उत्तराखंड राज्य की भावी पीढ़ी के इंजीनियरों के लाभ हेतु सहमति पत्र की इच्छा व्यक्त की।

प्रो. एस. के. भट्टाचार्य, निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के चालित कार्यक्रमों, विशेष रूप से 12वीं पंचवर्षीय योजना में सिविल इंजीनियरी के क्षेत्र में वैश्विक प्रभाव के संबंध में विशेषतः आवास पर केंद्रित अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों पर विशेष जोर दिया। उन्होंने हाल ही में



मुख्य अतिथि दीपप्रज्वलित करके कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए

कॉरपोरेट उद्योगों से लेकर ग्रामीण जनता तथा देश के सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले ग्रामीणों तथा इनकी पहुंच का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने सीएसआईआर तथा सीबीआरआई की सफलताओं की महत्वपूर्ण उपलब्धियों और सीएसआईआर के 69वें स्थापना दिवस समारोह की महत्ता के बारे में भी बताया।

श्री एस. जी. दवे ने मुख्य अतिथि तथा निदेशक का परिचय कराया जिसमें बाहर के प्राधिकारी, संस्थान के वर्तमान

संसद द्वारा पारित AcSIR अकादमी के अंतर्गत संस्थान द्वारा प्रारंभ किए गए पीजीआरपीई तथा डॉक्टरल कार्यक्रमों के बारे में बताया।

इससे पूर्व श्री एस. जी. दवे, मुख्य वैज्ञानिक तथा अध्यक्ष, सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह ने सीएसआईआर संस्थाओं, उनकी अनुसंधान एवं विकास गति-विधियों तथा बड़े औद्योगिक घरानों



प्रो. दुर्गा सिंह चौहान, उपकुलपति, उत्तराखंड टेक्नीकल यूनीवर्सिटी, देहरादून, अभिभाषण देते हुए



मुख्य अतिथि सीबीआरआई प्रकाशनों का विमोचन करते हुए

एवं पूर्व कर्मचारी, बाहर के स्कूलों के संकाय तथा छात्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कॉपर, एनआईएच, बीईजी तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं के लोग थे। उपस्थित लोगों ने सीबीआरआई के वरिष्ठ सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों तथा स्टाफ के इस महत्वपूर्ण दिवस पर संस्थान में पधारने तथा अपनी मधुर स्मृतियों का आदान-प्रदान करने पर प्रसन्नता की अनुभूति की।

समारोह का विशेष आकर्षण सीएसआईआर कर्मचारियों के बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता थी। इसमें विभिन्न विषयों पर दो गुणों में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि ने निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा 25 वर्ष की सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों को एक स्मृति चिह्न (कलाई घड़ी) तथा वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों को एक कलाई घड़ी, शाल तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

मुख्य अतिथि ने संस्थान के दो प्रकाशनों --आधारित संरचना एवं आपदा प्रबंधन इंजीनियरी पर पीजीआरपीई विवरणिका और भू-स्खलन जोखिम परिणाम तथा चुनौतियाँ - का विमोचन किया।

श्री आर.के. गर्ग, मुख्य वैज्ञानिक ने धन्यवाद प्रस्तुत किया तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया। इससे पूर्व, इस दिन को संस्थान ने 'ओपन डे' के रूप में मनाया। रुड़की के चार स्कूलों तथा कॉलेजों एएसआर्य सरस्वती विद्या मंदिर, साउथ सिविल लाईस, रुड़की, केन्द्रीय विद्यालय-1, डीएवी डिग्री कॉलेज तथा एसडीपीसी कन्या डिग्री कॉलेज के 90 छात्रों को सीएसआईआर के संकाय प्रशिक्षण तथा विज्ञान छात्रों व स्कूल तथा कॉलेजों को आमंत्रित कर अभिमुखीकरण कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। छात्रों ने अपने संकाय सदस्यों के साथ संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का भ्रमण किया तथा सीबीआरआई वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श किया। सभी छात्रों ने सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह में भी हिस्सा लिया।

इस अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक संध्या को सरस्वती वंदना से प्रारंभ किया गया इसमें फिल्मी गाने, परंपरागत-भांगड़ा, समूह तथा आधुनिक नृत्य तथा संगीत कार्यक्रम इत्यादि सम्मिलित थे। कार्यक्रम को परिसर वासियों तथा पीजीआरपीई छात्रों ने निष्पादित किया।

एनबीआरआई, लखनऊ में सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन



मंच का एक दृश्य

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में दिनांक 26 सितम्बर 2011 को सी.एस.आई.आर. स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह का शुभारम्भ प्रो. जमुना शरण सिंह, भूतपूर्व अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी व अन्य मंचासीन सदस्यों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। प्रो. सिंह का परिचय देते हुए संस्थान वेग निदेशक, डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल ने प्रो. सिंह का संक्षिप्त जीवनवृत्त बताया तथा यह हर्ष व्यक्त किया कि वनस्पति शास्त्र के एक मूर्धन्य वैज्ञानिक प्रो. सिंह आज इस अवसर पर हमारे मुख्य अतिथि हैं और हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने अपने व्यस्ततम समय से कुछ पल निकालकर हमारे इस कार्यक्रम हेतु प्रदान किये। डॉ. नौटियाल ने



सीएसआईआर स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारम्भ करते हुए मुख्य अतिथि एवं संस्थान के निदेशक

कहा कि हम यद्यपि वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर कार्यरत हैं तथा हमारा मुख्य उद्देश्य अभिनव संसाधन द्वारा प्रत्येक जीवन को छूना है। इस दिशा में हम निरन्तर ग्रामीणों, महिलाओं व अन्य वर्गों के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं जिसमें पुष्प कृषि, किचन, गार्डन व शुष्क पुष्प तकनीक द्वारा व्यवसाय सम्बन्धित जानकारी हमारे वैज्ञानिकों द्वारा निरन्तर दी जा रही है।

प्रो. सिंह ने अपने उद्बोधन में बताया कि बढ़ती हुई जनसंख्या आज की एक मुख्य समस्या है जिसकी वजह से न केवल जलवायु परिवर्तन हो रहा है तथापि जंगल व अनेक प्रजातियाँ भी नष्ट होती जा रही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि जनसंख्या का सीधा प्रभाव हमारे जीवन के अतिरिक्त पादप जगत पर भी पड़ता है। अपने विस्तृत वर्णन में उन्होंने 1950 से 2050 तक का तुलनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया तथा यह समझाने का प्रयास किया कि जो अविकसित देश हैं उनमें जनसंख्या की वृद्धि बहुत तीव्र गति हो रही है। हम 2050 तक चीन की जनसंख्या को पार कर लेंगे। यह हमारे लिए एक अत्यंत ही चिन्ता का विषय है। इस स्थिति में हमें अपनी जैव विविधता व प्रजातियों को संरक्षित रखने के लिए विस्तृत प्रयोजन करना पड़ेगा और तभी हम अपने देश को व देश की जनता का भरपूर भोजन प्रदान कर सकेंगे व स्वच्छ पर्यावरण दे सकेंगे। उन्होंने जीव जगत की विभिन्न प्रजातियों के नाश सम्बन्धी आंकड़े भी प्रस्तुत किये। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ इसमें एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है। इस अवसर पर प्रो. सिंह ने संस्थान के अवकाश प्राप्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों व कर्मचारियों तथा संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों को जिन्होंने 25 वर्ष की सेवा पूर्ण कर ली है, स्मृति-चिन्ह व सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया। संस्थान के निदेशक ने सीएसआईआर के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित निबन्ध प्रतियोगिता के विजेता बच्चों को पुरस्कार प्रदान किये। अंत में डॉ. एस.एन. सिंह, वरि. वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा संस्थान द्वारा किए गये प्रयासों का एक संक्षिप्त विवरण दिया। इस अवसर पर संस्थान बाहर के बच्चों के लिए खुला रहा और लगभग 1100 छात्रों ने जो कि क्रमशः सिटी मांटेसरी स्कूल, पायनियर मांटेसरी इण्टर कालेज, ब्राइट वे इण्टर कालेज तथा अन्य संस्थाओं से संबद्ध थे, संस्थान के विभिन्न विभागों का दौरा किया और संस्थान में होने वाली उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त की।

सीएसआईओ में सीएसआईआर स्थापना दिवस



मुख्य अतिथि श्री के. पी. सिंह स्थापना दिवस संबोधन देते हुए

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन में दिनांक 26 सितम्बर, 2011 को सीएसआईआर स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इसमें श्री के. पी. सिंह, अपर महा प्रबंधक, एआरडीसी, एचएएल, बेंगलूर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए और स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने संबोधन में सामरिक क्षेत्र से संबंधित विविध उन्नत प्रौद्योगिकियों एवं विशेषतः, उन क्षेत्रों पर चर्चा की जिनमें सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने सीएसआईआर-सीएसआईओ द्वारा एलसीए एवं एचजेटी के लिए विकसित किए गए हैड-अप डिस्प्ले (हड) की तुलना विदेशी हड करते हुए इसकी विशेषताओं की जानकारी दी। उन्होंने अपने व्याख्यान में लडाकू वायुयानों के लिए भविष्य की प्रौद्योगिकियों के बारे में भी बात की।

श्री एन. सुरेश, महा प्रबंधक, बीईएल, पंचकूला एवं सदस्य अनुसंधान परिषद्, सीएसआईआर-सीएसआईओ और बीईएल के सहयोग के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने विभिन्न अन्य उन्नत वायुयानों के लिए हड प्रौद्योगिकी की आवश्यकता पर बल दिया।

इससे पूर्व डॉ. पवन कपूर, निदेशक सीएसआईओ ने मुख्य अतिथि तथा अन्य आमंत्रितों का स्वागत करते हुए सीएसआईआर के उद्देश्यों और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों और स्कूली बच्चों के लिए विभिन्न प्रोत्साहन और योजनाओं का संक्षिप्त ब्यौरा दिया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत सीएसआईआर में 25 वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी करने वाले कर्मचारियों और पिछले



निदेशक, सीएसआईओ स्वागत संबोधन करते हुए



मुख्य अतिथि सीएसआईआर की खेलों में प्रोत्साहन संबंधी योजना के अंतर्गत एक बच्चे को पुरस्कृत करते हुए

एक वर्ष के दौरान सेवानिवृत्त हुए संगठन कर्मियों को स्मृति चिह्न और शॉल देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सीएसआईओ कर्मियों के उन बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभागिता की।

यह कार्यक्रम सीएसआईआर स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की गई विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार वितरण से समाप्त हुआ। कार्यक्रम के समापन पर श्री अनिल कुमार, प्रशासन

नियंत्रक ने औपचारिक रूप से धन्यवाद प्रस्तुत किया।

सीएसआईआर स्थापना दिवस के तहत संगठन की सभी प्रयोगशालाएं दोपहर एक बजे तक सामान्य जनता के लिए खुली रखी गई थीं, जिससे विभिन्न स्कूलों, इंजीनियरिंग कॉलेजों, विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और आम जनता सहित लगभग 300 लोगों ने प्रयोगशालाओं को देखा। इससे उन्हें संगठन में विकसित किए जा रहे उपकरणों को देखने और वैज्ञानिकों के साथ विचार-विमर्श करने का अवसर प्राप्त हुआ।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/ हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों यथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/ कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक,

सीएसआईआर समाचार

ईमेल: deeksha@niscair.res.in

सीएसआईआर-सीएसआईओ स्थापना दिवस

प्रौद्योगिकीय विकास की कल्पना भौतिक विज्ञानों के बिना नहीं की जा सकती और इसके लिए शैक्षिक, अनुसंधान एवं विकास तथा औद्योगिक संस्थानों के बीच निकट संपर्क की आवश्यकता होती है, यह बात डॉ. टी. रामासामी, सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार ने 30 अक्टूबर, 2011 को सीएसआईओ स्थापना दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में कही। उन्होंने अपने प्रेरक व्याख्यान में प्रौद्योगिकीय विकास के लिए कर्मियों की तुलना में संस्थान को अधिक महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने बात पर बल दिया कि केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भारत में वैज्ञानिक प्रकाशनों एवं पेटेण्ट की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। डॉ. रामासामी ने देश में प्रभावी नवाचार के लिए विभिन्न वैज्ञानिक एजेंसियों के बीच बेहतर तालमेल की आवश्यकता भी जताई। उन्होंने वैज्ञानिक निवेश एवं जीडीपी की परस्पर निर्भरता एवं पूरकता का उल्लेख करते हुए गर्व से सूचित किया कि इस क्षेत्र में भारत विश्व में पहले स्थान पर है। उन्होंने किफायती नवाचार की आवश्यकता पर भी बल दिया जिससे कि इसका लाभ आम जनता तक पहुंच सके।

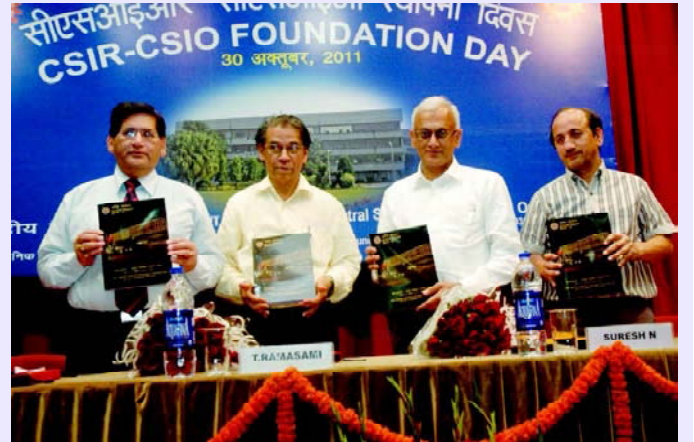
श्री एन. सुरेश, महाप्रबंधक, बीईएल, पंचकूला एवं सदस्य अनुसंधान परिषद्, सीएसआईआर-सीएसआईओ भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में प्रौद्योगिकी को एक उत्पाद के रूप में लाने के लिए विभिन्न एजेंसियों के बीच बेहतर संपर्क की आवश्यकता की बात कही। उन्होंने कहा कि सामरिक एवं गैर सामरिक दोनों ही क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय विकास पर त्वरित कार्य की आवश्यकता है।



मुख्य अतिथि सीएसआईओ स्थापना दिवस संबोधन करते हुए

डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ ने मुख्य अतिथि तथा अन्य आमंत्रितों का स्वागत करते हुए प्रयोगशाला के उद्देश्यों व लक्ष्यों और विज्ञान प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसके योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस दिन का इस वर्ष विशेष महत्व यह है कि यह संगठन की स्वर्ण जयंती से हीरक जयंती की ओर की यात्रा का प्रारंभ है। उन्होंने संगठन की वर्तमान और भावी परियोजनाओं तथा 11वीं पंचवर्षीय योजनाओं के प्रौद्योगिकीय परिणामों और विभिन्न सुपरा संस्थागत व नेटवर्क परियोजनाओं का भी संक्षिप्त ब्यौरा दिया।

इससे पूर्व डॉ. टी. रामासामी ने सीएसआईआर-सीएसआईओ के वर्ष 2010-11 के वार्षिक प्रतिवेदन का औपचारिक लोकार्पण किया। उन्होंने संगठन के स्नातकोत्तर कोर्स के लिए नवनिर्मित व्याख्यान परिसर तथा कृषि विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला का भी विधिवत् उद्घाटन किया। कार्यक्रम के समापन पर श्री ए. डी. कौल, चीफ वैज्ञानिक ने औपचारिक रूप से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।



संगठन की वार्षिक रिपोर्ट के विमोचन का एक दृश्य



उन्नत कृषि विश्लेषणात्मक प्रयोगशाला का विधिवत् उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि

महानिदेशक, सीएसआईआर द्वारा एनबीआरआई, लखनऊ में बोन्साई, साइकेड एवं पामहाउस का लोकार्पण

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल की उपस्थिति में प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर ने दिनांक 11 नवम्बर 2011 बोन्साई, साइकेड एवं पाम हाउस का लोकार्पण को किया। नवनिर्मित कन्जरवेटरी 1035 वर्गमीटर में फैली हुई है जिसमें बोन्साई, साइकेड एवं पाम के जर्मप्लाज्म का संग्रह किया गया है। देश में इस तरह की यह पहली कन्जरवेटरी है जहां वनस्पतिशास्त्री एक साथ बोन्साई, साइकेड और पाम का अध्ययन कर सकेंगे तथा यह वनस्पतिविदों, विद्यार्थियों तथा समाज के लिए उपयोगी होगी। बोन्साई गृह में 350, साइकेड में 45 और पाम गृह में 70 दुर्लभ एवं लुप्तप्राय प्रजातियों का संग्रह किया गया है। संस्थान में इस कन्जरवेटरी का लोकार्पण करने आये सीएसआईआर के महानिदेशक का स्वागत एनबीआरआई के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल ने पुष्पगुच्छ एवं एनबीआरआई द्वारा निर्मित शुष्क पुष्प से निर्मित चित्र देकर किया।

प्रो. ब्रह्मचारी ने एनबीआरआई के उद्यान में स्थित बरगद के पेड़ के नीचे मुक्ताकार मंच पर अपने उद्बोधन में कहा कि मुझे इस उद्यान में आकर खुशी मिल रही है। हम इस मामले में अत्यधिक धनी हैं कि सीएसआईआर के पास इतना खूबसूरत उद्यान है। डॉ. चन्द्र शेखर नौटियाल, निदेशक एनबीआरआई की प्रशंसा करते हुए प्रोफेसर ब्रह्मचारी ने कहा कि डॉ. नौटियाल ने बारहवीं पंचवर्षीय योजना के तहत कृषि भूमि के



प्रो. समीर के. ब्रह्मचारी, महानिदेशक, सीएसआईआर बोन्साई, साइकेड एवं पामहाउस का उद्घाटन करते हुए

लिए योजना तैयार की है जो लघु एवं सीमान्त किसानों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर उनके जीवन को ऊंचा उठाने में मददगार होगी। साथ ही साथ यह द्वितीय हरित क्रान्ति लाने में भी लाभकारी सिद्ध होगी। बायोफर्टिलाइजर की सहायता से कृषि भूमि में लगातार सुधार हो रहा है तथा इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जायेगा। डॉ. ब्रह्मचारी ने आगे कहा कि लखनऊ एनबीआरआई, सीमैप, आईआईटीआर एवं सीडीआरआई के प्रयासों द्वारा बायोलोजिकल साइंस का हब बनता जा रहा है। कार्यक्रम में सीएसआईआर मुख्यालय के प्लानिंग विभाग के डॉ. सुदीप कुमार, आईआईटीआरके निदेशक डॉ. के.सी. गुप्ता, सीमैप के निदेशक प्रोफेसर रामराज शेखरन के अतिरिक्त संस्थान के अनेक वैज्ञानिक, शोधार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन एनबीआरआई के

वैज्ञानिक डॉ. ए.के.एस. राठौर ने किया।

डॉ. ए.के. गोयल वैज्ञानिक एन.बी.आर.आई. ने बताया कि साइकेड की बहुमूल्य प्रजातियां इस संरक्षणशाला में संग्रहीत की गयी हैं जिनका अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार प्रतिबंधित है। पाम हाउस में सबसे भारी बीज लगभग 20 किग्रा. एवं छोटे बीज की प्रजातियों को संग्रहीत किया गया है। बोन्साई एक प्रकार की कला है जिसमें पेड़

पौधों की कटाई छंटाई करके उनको उथले एवं सैलो कंटेनर में रखा जाता है। बोन्साई प्लांट विश्व में घर की आंतरिक गृह सज्जा के रूप में प्रसिद्ध हैं।

पौधों को उनके वानस्पतिक नाम तथा रोपण की तिथि के अनुसार रखा गया है। जिन महत्वपूर्ण प्रजातियों को रखा गया है, उनके नाम हैं: अचरस सपोटा, ऐडेनसोनिया डिजिटटाटा, ऐडेनियम ओवसम, बेम्बुसा



प्रो. ब्रह्मचारी बोन्साई हाउस का अवलोकन करते हुए



प्रो. ब्रह्मचारी सम्बोधित करते हुए

वांट्रिकोसा, बो गेनबिलिया, कैलिस्टेमोन लैंसियोलेटस, साइट्रस माइक्रोकार्पा, साइकस रीवोलुटा, ड्रिफ्टस राक्सबर्गाई, फाइकस बेंगालेंसिस, फाइकस बेन्जामिना "न्यूडाद", फाइकस इण्डिका, फाइकस इनफेक्टोरिया, फाइकस लांग आइलैंड, फाइकस सिला, पार्चुलेकेरिया अफरा, सीडीयम ग्वाजावा, प्यूनिका ग्रेनेटम। एडोनसोनिया डिजिताटा (1960) एवं फाइकस सिला (1958)।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान द्वारा साइकेड गृह बनाया गया है। साइकेड को जीवित जीवाश्म या लिंगिंग फॉसिल कहा जाता है तथा यह साइकेड पौधे डायनोसोर काल के माने जाते हैं। लगभग ग्यारह जेनेरा तथा चार फेमिली के द्वारा 300 साइकेड की प्रजातियाँ विश्व भर में फैली हुई हैं। साइकेड की प्रजातियाँ बहुमूल्य हैं। यह साइकेड हाउस 300 वर्ग मीटर में फैला हुआ है।

भारत में इस तरह की पहली साइकेड की पौध संरक्षणशाला में 45 प्रजातियों का प्राकृतिक रूप में संग्रह किया गया है। साइकस डयून, इन्सेफेलरट्रस, लेपिडोजामिया, मैकोजामिया, मैक्रोसाइकस,

स्टेन्जेरिया, जामिया साइकेड आदि प्रमुख प्रजातियों को अध्ययन करने के लिए प्रदर्शित किया गया है।

पाम हाउस में भी उष्णकटिबंधीय (ट्रॉपिकल) और मध्यउष्णकटिबंधीय (सबट्रॉपिकल) क्षेत्र की दुर्लभ एवं लुप्तप्राय प्रजातियों का संग्रह किया गया है। यह पाम के पौधों के 240 जेनेरा 3800 प्रजातियों के साथ विश्व भर में फैले हुए हैं। पादप संसार में डबल कोकोनट का बीज सबसे भारी (20 कि.ग्रा.) माना जाता है। जबकि वाहिगटोनिया का बीज माचिस की तीली की नोक के बराबर होता है। पाम हाउस 285 वर्ग मीटर में फैला हुआ है। इस पाम हाउस में 70 प्रजातियों को डिस्प्ले किया गया है।

प्रमुख पाम प्रजातियों में अरेंगा पिन्नाटा, बिसमारिया नोविलिस, कैरियोटा मीट्रीस, कैरियोटा पूरेन्स, कैमियोडोरा एलीगेन्स, कैमियोडोरा स्टोलोनीफेरा, क्राइसेलीडोकार्पस ल्यूरिसेन्स, कोर्पस न्यूसीफेरा, डीमोनोरोप्स कुन्टसलेरी, लीकुला ग्रैंडीस, लीकुला स्पाइनोसा, लाटानिया लेंटेरोएडस, लीवीस्टोनिया चाइनेसिस, लीवीस्टोनिया कोचीसाइनेसिस, मासकोरेना वस्चैफिली, फोनिक्स रेक्लीनाटा, फोनिक्स रोबिलीनी, फ्रोनिक्स रूपोकोला, साइकोस्पर्मा मैकारथूरी, रैफीस ब्यूमिलिस (डवमर्य) सबलपामेटम, सबल डोमिनजेन्सिस, थ्राइनेक्स बारवेडेन्सिस, थ्राइनेक्स इक्सेल्स, ट्रेकीकपर्स टाकिल, वाशिनाटोनिया फिलीफेरा आदि हैं।

सीएसआईआर-एनसीएल के तीन वैज्ञानिकों को युवा वैज्ञानिक पुरस्कार

सीएसआईआर-एनसीएल के तीन वैज्ञानिकों - डॉ. अमोल अरविंदराव कुलकर्णी, डॉ. दत्तात्रेय एच. देटे एवं डॉ. राहुल बैनर्जी को सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार 2011 के लिए चुना गया है।

डॉ. अमोल कुलकर्णी को वर्ष 2011 हेतु अभियांत्रिकी विज्ञान में सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए चुना गया है जबकि डॉ. डी.एच. देटे एवं डॉ. राहुल बैनर्जी को वर्ष 2011 हेतु रसायन विज्ञान में सीएसआईआर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार के लिए चुना गया है।

डॉ. अमोल अरविंदराव कुलकर्णी रासायनिक अभियांत्रिकी एवं प्रक्रिया विकास प्रभाग में कार्यरत है। उन्होंने रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई (पूर्व का यूडीसीटी) से पीएच.डी. की उपाधि तथा मैक्स प्लैंक संस्थान, मैग्डेबर्ग (जर्मनी) से डॉक्टरोत्तर उपाधि प्राप्त की है। इसके अलावा डॉ. कुलकर्णी मैसेच्युसेट्स इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी), कैम्ब्रिज, यूएसए के आईयूएसएसटीएफ अनुसंधान फैलो रहे हैं। डॉ. कुलकर्णी को माइक्रोरिएक्टर प्रौद्योगिकी, माइक्रोफ्लूइडिक्स, निरन्तर प्रवाह संश्लेषण एवं स्केल अप, मल्टिफेज रिएक्टरों का द्रवगतिविज्ञान, प्रायोगिक तरल गतिकी को समझना आदि में विशेष रुचि है।

डॉ. कुलकर्णी के अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में 35 शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं। इसके अलावा उन्होंने वैश्विक स्तर पर एक, चार भारतीय एवं एक डिज़ाइन पेटेंट फाइल किये हैं। उनके मार्गदर्शन में एम.टेक.के दो छात्रों ने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है तथा वर्तमान में दो पीएच.डी. तथा एक स्नातकोत्तर छात्र को वे मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। डॉ. कुलकर्णी को वर्ष



2009 हेतु भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी का युवा वैज्ञानिक पदक, भारतीय राष्ट्रीय अभियांत्रिकी अकादमी का वर्ष 2009 का युवा अभियंता पुरस्कार, मैसेच्युसेट्स प्रौद्योगिकी संस्थान, कैम्ब्रिज, संयुक्त राज्य अमरीका में अनुसंधान करने हेतु 2009-2010 का प्रौद्योगिकी फोरम अनुसंधान शोधवृत्ति, मैक्स प्लैंक सोसायटी म्युनिख (जर्मनी) द्वारा 2008-2012 के लिए मैक्स प्लैंक अतिथि शोधवृत्ति, मैक्स प्लैंक संस्थान में जनवरी 2004 से मार्च 2005 तक डॉक्टरोत्तर शोधकार्य हेतु एवीएच फाउण्डेशन जर्मनी द्वारा हम्बोल्ट अनुसंधान शोधवृत्ति प्रदान की गई।

डॉ. दत्तात्रेय एच. देठे एनसीएल के कार्बनिक रसायन प्रभाग में कार्यरत हैं। वे टोटल सिन्थेसिस ऑफ बायोएक्टिव नेचरल प्रोडक्ट्स के क्षेत्र में शोधकार्य कर रहे हैं। जुलाई 2009 में एनसीएल में कार्यभार संभालने के बाद डॉ. देठे ने टोटल सिन्थेसिस ऑफ बायोएक्टिव



नेचरल प्रोडक्ट्स एण्ड देअर सिम्पलीफाइड एनालॉग्स फॉर स्ट्रक्चर एक्टिविटी रिलेशनशिप का अध्ययन एवं न्यू ड्रग डिलीवरी कार्यक्रम पर प्रमुख अनुसंधान कार्य शुरू किया। एनसीएल में आने से पूर्व डॉ. देठे ने प्रो. के.सी. निकोलोव (स्क्रिप्स अनुसंधान संस्थान, ला जोला एण्ड आईसीईएस, सिंगापुर) के साथ शोधकार्य किया है जहाँ पर उन्होंने पाल्मेरोलाइड ए, थियोपेप्टाइड प्रतिजैविक जीई 2270 ओ, बी, सी1 एवं एमिथियामाइसीन ए, बी, सी कैन्सर रोधी कारक जैसे कई सम्मिश्र जैवसक्रिय उत्पादों का टोटल संश्लेषण प्राप्त किया है। डॉ. देठे के बारह शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं और उन्होंने एक पेटेंट

भी फाइल किया है। वर्तमान में आठ शोधछात्र उनके साथ शोधकार्य कर रहे हैं।

डॉ. राहुल बैनर्जी भौतिक एवं पदार्थ रसायन प्रभाग में कार्यरत हैं तथा उनके अनुसंधान कार्य में रिवर्सिबल हाइड्रोजन स्टोरेज एण्ड कार्बन डाइऑक्साइड सिक्वेस्ट्रेशन एप्लीकेशन्स शामिल हैं। डॉ. राहुल बैनर्जी पिछले तीन वर्षों से सीएसआईआर-एनसीएल में कार्यरत हैं। उनके अनुसंधान का उद्देश्य है रिवर्सिबल हाइड्रोजन स्टोरेज फॉर ऑन-बोर्ड एप्लीकेशन्स एवं



कार्बन डाइऑक्साइड सिक्वेस्ट्रेशन फॉर क्लीन एनवायरनमेन्ट। वे भारत एवं विदेश की कई सहयोगी अनुसंधान गतिविधियों में भाग लेते हैं। डॉ. बैनर्जी के कुल 34 शोधपत्र अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

डॉ. बैनर्जी पुणे विद्यापीठ द्वारा पीएच.डी. हेतु मान्यताप्राप्त मार्गदर्शक हैं। वर्तमान में सात कनिष्ठ शोधछात्र, एक परियोजना सहायक एवं एक सीएसआईआर-नेहरू डॉक्टरोत्तर शोधछात्र उनके साथ कार्य कर रहे हैं। इससे पूर्व डॉ. बैनर्जी को भारतीय विज्ञान अकादमी का वर्ष 2009-2012 का युवा शोधसहयोगी पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके अलावा वे एकटा क्रिस्टैलोग्राफिका सेक्शन ई नामक पत्रिका के सह-संपादक भी हैं।

इस पुरस्कार के अन्तर्गत नकद राशि एवं प्रशंसापत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार तीनों वैज्ञानिकों को 26 सितम्बर, 2011 को सीएसआईआर के स्थापना दिवस पर सीएसआईआर, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में प्रदान किए गए।

एनबीआरआई, लखनऊ में शुष्क पुष्प कृषि कार्यशाला

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का ध्येय जीवन को स्पर्श करने वाला पादप आधारित अभिनव अनुसंधान है तथा इसी कड़ी में अहसास संस्था के निराश्रित बच्चों हेतु शुष्क पुष्प कृषि द्वारा व्यावसायिक ज्ञान विषय पर राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के उद्घाटन भाषण में संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल ने हर्ष व्यक्त करते हुए संस्था की संस्थापक सचिव श्रीमती सची सिंह का स्वागत किया तथा कहा कि बच्चे भगवान की वह अभिव्यक्ति है जिसे खुश देखकर हर कोई प्रसन्न हो जाता है। डॉ. चन्द्रशेखर नौटियाल ने कहा कि हमें हर्ष है कि हमारा संस्थान इन बच्चों के जीवन को खुशी प्रदान करने में एक छोटी सी सहायक भूमिका निभा रहा है। इस तकनीकी द्वारा बच्चे स्वावलंबी हो कर अपना जीविकोपार्जन कर सकने में सक्षम होंगे। इस अवसर पर श्रीमती सची सिंह जी ने निदेशक का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बच्चे एक नयी आशा लेकर यहां से जायेंगे तथा आपके संस्थान का यह सहयोग इन के लिए सदा उपयोगी होगा। कार्यक्रम संस्थान की ग्रामीण विकास परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया तथा डॉ. तिवारी ने परियोजना के उद्देश्यों का वर्णन किया। डॉ. ए. के. गोयल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सीएसआईआर-राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में विज्ञान मंथन यात्रा हेतु मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के तत्वावधान में 125 मेधावी छात्रों ने भ्रमण किया तथा वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. चन्द्र शेखर नौटियाल ने हर्ष व्यक्त करते हुए छात्रों का स्वागत किया तथा उनके साथ वार्ता की।

एचआरडीसी, गाजियाबाद में राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद मुख्यालय (सीएसआईआर मु.) के राजभाषा अनुभाग तथा मानव संसाधन विकास केन्द्र (एचआरडीसी), गाजियाबाद के संयुक्त तत्वावधान में सीएसआईआर के हिंदी पदाधिकारियों के लिए दिनांक 29 से 31.08.11 तक एचआरडीसी, गाजियाबाद में **राजभाषा कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम** का आयोजन किया गया जिसमें 41 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रख्यात साहित्यकार, लेखक, कवि, शिक्षाविद्, भाषाविद्, समाज-वैज्ञानिक, नृ-वैज्ञानिक, यायावर, विचारक, पत्रकार व पूर्व महानिदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि को आमंत्रित किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में बोलते हुए डॉ शशि ने कहा कि मातृभाषा का दर्जा मां के समान होता है। हमें विश्व के अन्य विकसित देशों की तरह अपनी

भाषा और संस्कृति पर गौरव होना चाहिए। उन्होंने अपने व्याख्यान के दौरान प्रतिभागियों के समक्ष शब्द यात्रा के कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किए। 75 वर्ष की आयु में भी अविरत कार्य करने वाले और अब तक लगभग 400 पुस्तकों की रचना कर चुके डॉ. शशि ने यह भी कहा कि सृजनशीलता का व्यक्ति विशेष की आयु से कोई संबंध नहीं होता वरन् सृजनशीलता से व्यक्ति सक्रिय व युवा रहता है। उन्होंने कहा कि इस बात पर मिलकर विचार करने की आवश्यकता है कि हिंदी भाषा के प्रयोग को आगे कैसे बढ़ाया जाए और हिंदी में शत-प्रतिशत काम कैसे किया जाए।

तीन दिवसीय इस कार्यक्रम के प्रथम सत्र में भारत सरकार के पूर्व वरिष्ठ निदेशक (राजभाषा) डॉ. महेश चंद्र गुप्त ने प्रतिभागियों को संघ की राजभाषा संबंधी संवैधानिक व्यवस्थाओं और उनके अनुपालनार्थ हमारे दायित्व विषयक सारगर्भित व अनुभवजन्य

जानकारी दी। द्वितीय सत्र में पूर्व सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक व भाषा परामर्शदाता तथा उपाध्यक्ष, भारतीय अनुवाद संघ, श्री चंद्र मोहन रावल ने प्रतिभागियों को इंस्क्रिप्ट कुंजी पटल की वैज्ञानिकता, व्यावहारिकता तथा डिजिटल टूल्स की उपयोगिता के सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्ष पर विशेष जानकारी प्रदान की। साथ ही उन्होंने इंस्क्रिप्ट कीबोर्ड पर कार्य करने का अभ्यास भी कराया।

भारत सरकार के राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने कार्यक्रम के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में यूनिकोड की उपयोगिता तथा उसके महत्वादि के साथ-साथ प्रतिभागियों को विभिन्न डिजिटल टूल्स की उपयोगिता व राजभाषा से संबंधित अनेक वेबसाइटों आदि की जानकारी दी। दूसरे सत्र में परिषद मुख्यालय में वरिष्ठ उप सचिव (रा.भा.) श्री राकेश कुमार शर्मा ने राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन



को कैसे अमली जामा पहनाया जाए व किन विधियों, उपकरणों व साधनों की सहायता से परिषद की विभिन्न प्रयोगशालाओं/संस्थानों में राजभाषा हिंदी के उपयोग में वृद्धि की जाए, विषय पर स्वरचित स्लाइड शो पर पावरप्वॉइंट प्रेजेंटेशन दिया। उन्होंने प्रतिभागियों को गूगल ट्रांस्लिट्रेशन व गूगल ट्रांसलेशन सुविधा की संक्षिप्त जानकारी दी और प्रतिभागियों को गूगल ट्रांस्लिट्रेशन सुविधा पर कार्य करने का अभ्यास भी कराया व साथ ही यह आशा भी व्यक्त की कि सभी प्रतिभागी अपने-अपने कार्यालयों के वैज्ञानिकों/प्रशासन से जुड़े अन्य कार्मिकों को इस सुविधा का उपयोग करने हेतु प्रेरित करेंगे ताकि संघ की राजभाषा नीति को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया जा सके।

कार्यक्रम के तीसरे और अंतिम दिन के प्रथम सत्र में सुश्री मीता लाल, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, अरविंद भाषा विज्ञान संस्थान ने वैज्ञानिक/कार्यालयी लेखन में **द पैंगुइन इंग्लिश-हिंदी/हिंदी-इंग्लिश थिसारस एंड डिक्शनरी** की भूमिका और उपयोगिता पर अपना सुंदर प्रस्तुतीकरण किया तथा विभिन्न हिंदी-अंग्रेजी-हिंदी शब्दों के पर्यायों के संबंध में प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण भी किया। अंतिम सत्र में परिषद मुख्यालय में कार्यरत वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ. पूरनपाल ने प्रतिभागियों को राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन, बैठकों और इस समिति द्वारा किए जाने वाले कार्यों तथा संसदीय राजभाषा समिति निरीक्षण प्रश्नावली की विभिन्न मदों को भरने व इस दौरान आने वाली कठिनाइयों के सुगमीकरण आदि पर अत्यंत अभिनव व उपयोगी व्याख्यान दिया।

समापन तथा प्रमाण-पत्र वितरण समारोह में डॉ. मनु सक्सेना, प्रभारी-वैज्ञानिक, एचआरडीसी ने डॉ. हरिवंश राय बच्चन की प्रोत्साहित करने वाली कविता-**कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती** उद्धृत करते

हुए यह उम्मीद जताई कि तीन दिवसीय इस कार्यक्रम से प्रतिभागी अवश्य लाभान्वित हुए होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि यह कार्यक्रम तभी सार्थक सिद्ध होगा जब इस दौरान अर्जित ज्ञान को प्रतिभागी अपने-अपने कार्यालयों में उपयोग में लाएंगे व अन्व्यों को भी इस हेतु प्रेरित-प्रोत्साहित करेंगे ताकि परिषद में संघ की राजभाषा नीति का सफलतम कार्यान्वयन सुनिश्चित हो सके।



सीएसआईआर-राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला में राष्ट्रीय विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन

अन्तराष्ट्रीय रसायन विज्ञान वर्ष के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में कार्बोहाइड्रेट आधारित रासायनिक उद्योग पर हिन्दी में दो-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में एनसीएल एवं सीएसआईआर की विभिन्नप्रयोगशालाओं/संस्थानों एवं देश के अनेक विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थानों के लगभग 40 वैज्ञानिकों, प्राध्यापकों एवं शोधछात्रों ने भाग लिया।

एनसीएल के व्याख्यान कक्ष में इस कार्यशाला का उद्घाटन मुख्य अतिथि एवं राष्ट्रीय कोशिका विज्ञान केन्द्र के निदेशक, डॉ. जी.सी. मिश्र ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि एनसीएल जैसी विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला में हिन्दी माध्यम से राष्ट्रीय विज्ञान कार्यशाला का आयोजन इस प्रयोगशाला एवं देश के लिए गौरव की बात है। उन्होंने आगे कहा कि इस कार्यशाला का आयोजन इस बात को भी रेखांकित करता है कि यदि हम चाहें तो वैज्ञानिक अनुसंधान को भी हम सहज एवं सरल हिन्दी के माध्यम से सामान्य जनता के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं ताकि देश की जनता को भी हमारी वैज्ञानिक खोजों एवं अनुसंधान की जानकारी प्राप्त हो सके।

कार्यशाला के आरम्भ में कार्यशाला के संयोजक, डॉ. ए.जे. वर्मा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि समस्त संसार में यह तीव्रता से महसूस किया जा रहा है कि व्यर्थ कृषि अपशिष्टों से हमें वह कच्चा पदार्थ मिल सकता है जिससे हम अनेक औद्योगिक एवं उपभोक्ता उत्पादों जैसे - स्पेशियलिटी रसायन, ईंधन, पेण्ट, अपमार्जकों, जैवनिम्नीकरणीय बहुलकों तथा वस्त्र के रेशों का निर्माण कर सकते हैं। इन कृषि अपशिष्टों में 70



स्वागत अभिभाषण देते हुए डॉ. सौरव पाल



उद्घाटन अभिभाषण देते हुए डॉ. जी.सी. मिश्रा

प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है जिसे पेट्रोलियम पदार्थों के निर्माण में प्रयोग में लाया जा सकता है। इस संगोष्ठी की विशेषता यह है कि इसमें प्रस्तुत किए गए शोधपत्रों को अंग्रेजी की अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान पत्रिका **ट्रेण्ड्स** में **इन कार्बोहाइड्रेट रिसर्च** को हिन्दी और अंग्रेजी में पहली बार प्रकाशित किया जाएगा। प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ. सौरव

वर्ष घोषित करने की पहल की है। डॉ. पाल ने कहा कि हमारा देश पेट्रोरसायन के मामले में दूसरे देशों पर निर्भर है। अतः हमें रसायनों, ईंधन तथा बहुलकों की अपनी भावी जरूरतों हेतु कृषि अपशिष्टों का अधिकतम उपयोग करने के लिए एक प्रभावी रणनीति बनानी चाहिए। तत्पश्चात् डॉ. पी.एल. सोनी, पूर्व रसायनविज्ञान विभाग प्रमुख, वन अनुसंधान

पाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि अन्तरराष्ट्रीय रसायन विज्ञान वर्ष में रसायनविज्ञान से सम्बन्धित विषय पर हिन्दी में राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन से हम गौरवान्वित हैं। रसायनविज्ञान की दिश्यापी उपलब्धियों और मानवकल्याण की दिशा में इसके योगदानों को ध्यान में रखकर ही इन्टरनेशनल यूनियन ऑफ प्योर एण्ड एप्लाइड केमिस्ट्री तथा यूनेस्को ने इस वर्ष को अन्तरराष्ट्रीय रसायन विज्ञान

संस्थान, देहरादून ने बायोमास से सेलुलोस की प्राप्ति और उसके महत्व एवं अनुप्रयोगों पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस कार्यशाला में उपस्थित डॉ. दुर्गादत्त ओझा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं विख्यात विज्ञान लेखक ने विज्ञान एवं हिन्दी के परस्पर सम्बन्ध पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय विज्ञान को भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत करना वर्तमान समय की माँग है।

कार्यशाला के दूसरे दिन तकनीकी सत्र के आरम्भ में प्रयोगशाला के निदेशक, डॉ. सौरव पाल ने मुख्य अतिथि प्रो. अशोक कुमार शुक्ल, प्रमुख, विज्ञान संकाय, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु का स्वागत किया। पूर्वाह्न के सत्र में प्रो. अशोक कुमार शुक्ल ने ऊर्जा उत्पादन में विद्युतरसायन विज्ञान की भूमिका के विषय पर मूल अभिभाषण दिया। उन्होंने रासायनिक अभिक्रियाओं से उत्पन्न होने वाली विद्युत ऊर्जा और इस ऊर्जा को संग्रहीत करने वाली अनेक प्रकार की बैटरियों का विस्तार से उल्लेख किया। प्रो. शुक्ल ने बताया कि समाज की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने में विद्युतरसायन विज्ञान का बहुत बड़ा योगदान है। इस तकनीकी सत्र में 17 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

इस राष्ट्रीय कार्यशाला के सभी प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आसन्न ऊर्जा संकट को ध्यान में रखते हुए इस प्रकार की कार्यशालाओं/संगोष्ठियों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया। अन्त में सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रदर्शन के साथ उक्त राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन हुआ।



राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निस्केयर), डॉ. के.एस. कृष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए दीक्षा बिष्ट द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निस्केयर प्रेस द्वारा मुद्रित।

संपादक: दीक्षा बिष्ट; सह संपादक: डॉ. विनीता सिंघल; अनुवाद: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आऊट: सरला दत्ता; कम्पोजिंग: कृष्णा

फोन: 25848702, 25846301, 25846303, 25842990, 25846304-7/361 ग्राम: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062

ई-मेल: deeksha@niscair.res.in वेबसाइट: <http://www.niscair.res.in> पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर सम्पर्क करें